पाठ-5

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम-कारण एवं परिणाम

लार्ड डलहौजी के बाद 1856 में लार्ड कैनिंग भारत में अंग्रेजों का अंतिम गवर्नर था। 1856 तक गवर्नर-जनरलों ने अपनी विभिन्न नीतियों के कारण भारत पर विजय लगभग पूर्ण कर ली थी। भारत में विदेशी शासन छल-बल, सैन्य-बल तथा अर्थ-बल पर टिका हुआ था, किन्तु 1757 में प्लासी युद्ध के समय से ही किसानों, कारीगरों, शिल्पकारों, राजाओं

और सिपाहियों व अंग्रेजों के बीच विवाद उत्पन्न होने लगे। इसके पूर्व भी समय-समय पर देश के विभिन्न भागों में निम्नलिखित विद्रोह भी हुए:

संन्यासियों एवं फकीरों द्वारा धार्मिक पुनरुत्थान के लिए बंगाल का विद्रोह।

सिपाहियों का विदेशी शासकों एवं विदेशी प्रशासन के विरुद्ध विद्रोह।

मध्य प्रदेश में भील, बंगाल, बिहार में संथालों, उड़ीसा में कोल, गौंड़ तथा मेघालय की खासी आदि जनजातियों का अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध विद्रोह।

लेकिन इन विद्रोहों के स्थानीय होने के कारण तथा पारस्परिक समन्वय के अभाव के कारण अंग्रेजों द्वारा आसानी से इनका दमन कर दिया गया। इसके बावजूद अंग्रेजों की दमन नीति के खिलाफ भारतीय क्रान्तिकारियों का विद्रोह जारी रहा और सन् 1857 में व्यापक रूप से विद्रोह की योजना बनायी गई। अंग्रेजों के खिलाफ इस प्रकार के विद्रोह को सन् 1857 की क्रांति के नाम से जाना जाता है। इस जन असंतोष ने उत्तर तथा मध्य भारत में ब्रिटिश राज्य को कुछ समय के लिए लगभग समाप्त कर दिया था।

सन् 1857 की क्रांति

लगभग 150 वर्षों में अंग्रेज शासकों ने सभी भारतीय संस्थाओं में राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, न्यायिक दखल दिया। इससे भारत में प्रभुत्व वर्ग वालों को सीधे ठेस पहुँची और शासक एवं जनता के बीच संदेह का माहौल बन गया।

सन् 1857 की क्रांति के निम्नलिखित कारण थे-

आर्थिक कारण-

ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्ति व भारतीय उपनिवेशों की अर्थव्यवस्था को अपनी अर्थव्यवस्था का पूरक बना रही थी अर्थात् भारत (उपनिवेश राज्य), इंग्लैण्ड (विदेशी साम्राज्य) को आवश्यकतानुसार अपना कच्चा माल (कपास, नील) देता।

- इस कच्चे माल से मशीनों से ज्यादा व सस्ती वस्तुएँ बनाकर हमारे देशवासियों को ऊँचे मूल्य पर बेचते।
- ऊँची दरों पर करों के कारण भारतीय वस्त्र उद्योग निर्यात बहुत प्रभावित हुआ।
- भारतीय शिल्प की दशा बिगड़ती गयी। अंग्रेजों ने इसके विकास के लिए बिल्कुल ध्यान नहीं दिया।
- अंग्रेज शासकों ने भारतीय कुटीर उद्योगों को तहस-नहस कर दिया। इससे भारत के उद्योग की स्थिति शीघ्र क्षीण हो गयी और भारतीय कारीगरों की दशा खराब होती चली गयी।
- अकाल एवं गरीबी के कारण किसानों में असंतोष था। बढ़े हुए लगान वसूलने के कारण किसान

- क्षुब्ध थे।
- सेना से हटाए गए सैनिक भी अंग्रेजों के शत्रु हो गए।
- शिक्षित भारतीयों को उच्च पदों पर नहीं नियुक्त किया जाता था। उन्हें अंग्रेज कर्मचारियों की तुलना में बहुत कम वेतन भी दिया जाता था।

बहादुरशाह जफर

राजनैतिक कारण-

यद्यपि भारत में राजनीतिक सत्ता वास्तविक रूप में अंग्रेजों के हाथ में थी, फिर भी शासन दिल्ली के मुगल बादशाह के नाम पर ही चलता था। वह देश की एकता का प्रतीक था। अंग्रेजों ने तत्कालीन मुगल सम्राट बहादुर शाह 'जफर' के साथ अपमानजनक व्यवहार किया। 1835 ई. में कम्पनी के सिक्कों से मुगल सम्राट का नाम हटा दिया गया।

लार्ड डलहौजी की विलय नीति के तहत देशी राज्यों को ब्रिटिश राज्य में किसी न किसी बहाने मिलाया जाता था। इससे सभी देशी राज्य आतंकित हो गये। उनका अस्तित्व भी संकट में पड़ गया। अंग्रेजी शासन एक पक्षीय निर्णय लेता था जिससे उनका 'विदेशीपन' एवं नीयत सुस्पष्ट हो गई। इसी नीति के कारण सतारा, झाँसी, नागपुर और दूसरे राज्य अंग्रेजों के कब्जे में आ गए थे। डलहौजी ने पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब की वार्षिक पेंशन भी बन्द कर दी थी जिससे नाना साहब तथा अन्य राज्य अंग्रेजों के कट्टर शत्रु हो गये।

डलहौजी ने कुशासन के कारण अवध को अपने साम्राज्य में मिलाने के बाद सिपाहियों को हटा तो दिया लेकिन उन्हें कोई रोजगार नहीं दिया। इससे उनके मन में अंग्रेजों के प्रति नफरत हो गयी।

अंग्रेजों द्वारा जमीदारों तथा तालुकेदारों को भूमि का मालिक बनाया गया और उन्हें मनमाने लगान वसूलने की छूट दी गयी जिसके कारण किसानों में असंतोष था।

ब्रिटिश न्याय प्रणाली भारतीय कानून की अनदेखी करती थी। यह प्रणाली भारतीयों के लिए बड़ी खर्चीली, पेंचीदी और लम्बी प्रक्रिया वाली थी।

इसके अलावा भारतीय शासन में ऊँचे पद प्राप्त नहीं कर सकते थे। उनकी योग्यता का आदर नहीं होता था जिससे भारतीयों के बीच अविश्वास व असंतोष बढ़ता गया। अंग्रेजों द्वारा लगाए गए तमाम तरह के बंधन और अपमान भारतीयों के लिए असह्य हो गये थे।

सामाजिक और धार्मिक कारण-

अंग्रेज, भारत की अशिक्षा, सामाजिक अनेकता तथा व्याप्त कुरीतियों के साथ-साथ आर्थिक पिछड़ेपन और भारत पर शासनाधिकार स्थापित होने से, भारतीयों को तुच्छ समझते थे।

सामान्य लोगों को पाश्चात्य शिक्षा दिलाना भारतीयों को ईसाई बनाने की अंग्रेजों की चाल समझी जाने लगी।

अंग्रेजों द्वारा प्रारम्भ की गई रेल और डाक व्यवस्था को भारतीयों ने अपने धर्म के खिलाफ तथा ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की चाल समझा।

ईसाई मिशनरी हिन्दू और मुसलमानों का धर्म परिवर्तन करने लगे तथा हिन्दू धर्म तथा इस्लाम की खुली निंदा करने लगे।

ब्राह्मण तथा मौलवी पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार व प्रभाव के कारण अपनी पकड़ तथा प्रभाव को कम होने की आशंका करने लगे।

सन् 1850 में कम्पनी ने एक कानून पास किया कि जो ईसाई हो जाएगा उसे उसके पैतृक सम्पत्ति का भागीदार बनाया जाएगा। इसे हिन्दुओं द्वारा अपना अपमान समझा गया।

सैन्य कारण-

सेना में भारतीयों के साथ भेद-भाव किया जाता था। उन्हें ऊँचे पदों पर नहीं रखा जाता था उनका वेतन एवं सुविधाएँ अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षाकृत कम थीं।

झाँसी की रानी

अंग्रेजों ने नई रायफलों का प्रयोग किया जिनमें लगाए जाने वाले कारतूसों में गाय एवं सुअर की चर्बी लगी होने की अफवाह फैली। इससे हिन्दू और मुसलमान दोनों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची और इस बात ने भी अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में चिंगारी का काम किया।

तात्याँ टोपे

क्रांति की योजना

देश में ऐसी अशान्त परिस्थितियों में एक सशक्त संघर्ष द्वारा भारत से अंग्रेजों को बाहर निकालने की योजना बनाई गयी। स्वतंत्रता संघर्ष की योजना का कार्य नाना साहब, तात्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा कुँवर सिंह आदि ने आरम्भ किया। इस आन्दोलन का अखिल भारतीय नेतृत्व करने के लिए बहादुर शाह जफर को चुना गया। दिल्ली, लखनऊ, झाँसी, मैसूर व अवध के नवाबों, राजाओं तथा जमींदारों से सम्पर्क किया गया।

मुगल सम्राट बहादुर शाह तथा उनकी बेगम जीनत महल, अवध के नवाब की बेगम हजरत महल तथा कुँवर सिंह आदि का संगठन बनाया गया। आन्दोलनकारियों द्वारा 'रोटी' तथा 'कमल के फूल' को विद्रोह के संदेश का प्रतीक बनाया गया। संघर्ष की तिथि 31 मई, 1857 निश्चित की गयी।

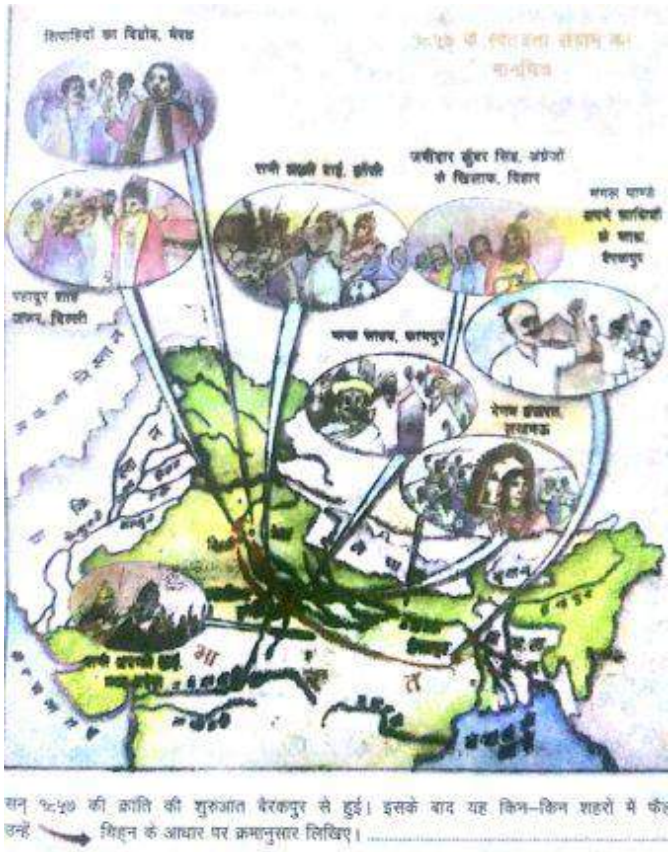

सन् १८५७ की क्रांति की शुरुआत बैरकपुर से हुई। इसके बाद यह किन–किन शहरों में फै
उन्हें → चिह्न के आधार पर क्रमानुसार लिखिए। ....

क्रांति की प्रमुख घटनाएँ

बैरकपुर- लार्ड कैनिंग ने चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग के लिए भारतीय सैनिकों के साथ धोखा-

धड़ी की। 29 मार्च सन् 1857 को बंगाल छावनी के सिपाही मंगल पाण्डे ने कारतूस के प्रयोग से मना कर दिया तथा यह खबर अपने आदमियों को भेज दी। इसके परिणाम स्वरूप मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी गयी।

मेरठ- 9 मई की घटना के अनुसार 90 में से 85 सिपाहियों ने कारतूस में दाँत लगाने से मना कर दिया। इस कारण इन सिपाहियों को दस वर्ष की जेल की सख्त सजा दी गयी तथा मेरठ की गलियों में उन्हें हथकड़ी पहनाकर घुमाया गया। अगली सुबह मेरठ वासियों ने जेल में धावा बोलकर उन्हें छुड़ा लिया तथा कई अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला।

दिल्ली- इसके बाद हजारों सैनिकों ने दिल्ली की ओर कूच किया। वहाँ के लोग उनके साथ मिलकर लालकिले पहुँचे। वहाँ पहुँचकर बहादुरशाह-द्वितीय को भारत का शासक घोषित कर दिया। लेकिन चार माह बाद अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। बहादुरशाह-द्वितीय की 1862 में रंगून (यंगून) में मृत्यु हो गयी। यह घटना मध्यभारत तथा रुहेलखण्ड में आग की तरह फैल गयी। इसके कारण बरेली, कानपुर, लखनऊ, वाराणसी तथा झाँसी के सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए।

कानपुर- नाना साहब कानपुर में पेशवा घोषित कर दिए गए। अजीम उल्ला खाँ नाना साहब का सहयोगी था। नाना साहब ने अंग्रेज की सारी फौज को कानपुर से खदेड़ दिया। नाना साहब ने आत्म समर्पण करने वाले सिपाहियों को छोड़ दिया। इन अंग्रेज सिपाहियों को नाव द्वारा नाना साहब सुरक्षित इलाहाबाद भेज रहे थे किन्तु जैसे ही ये लोग नाव पर बैठे वैसे ही नाना साहब के आदमियों ने उन पर आक्रमण करके महिलाओं और बच्चों को छोड़कर सभी को मार डाला। इसके बाद अंग्रेज जनरल हैवलॉक ने कानपुर पर कब्जा करके नाना साहब को नेपाल भेज दिया। नाना साहब के बाद जनरल तात्या टोपे ने कानपुर की कमान सँभाली, किन्तु उनके आदमी ने उनके साथ विश्वासघात किया जिसके कारण 1859 में तात्या टोपे को फाँसी दे दी गयी।

30 जुलाई, 1857, लखनऊ में विद्रोह

लखनऊ- अवध की राजधानी लखनऊ की क्रान्ति की बागडोर वाजिद अलीशाह की बेगम हजरत महल ने सँभाली। क्रांतिकारियों ने रेजीडेंसी का घेराव कर लिया। अन्त में अंग्रेजों का लखनऊ पर आधिपत्य हो गया। बाद में बेगम हजरत महल नेपाल चली गयीं।

मध्यभारत- झाँसी में रानी लक्ष्मी बाई सर ह्यूरोज की सेना के साथ बहादुरी से लड़ीं किन्तु झाँसी पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। कालपी में रानी तात्या टोपे से मिल गयीं। उन्होंने एक साथ ग्वालियर के सिंधिया पर आक्रमण करके किले पर अधिकार कर लिया। लेकिन बाद में सर ह्यूरोज ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। रानी बहादुरी से लड़ते हुए मारी गयीं।

रेजीडेंसी, लखनऊ

मध्यप्रदेश- रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया परन्तु अंग्रेजों ने स्वतंत्रता संघर्ष को दबा दिया।

बिहार- यहाँ स्थानीय जमींदार कुँवर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा था।

इस प्रकार यह महान संघर्ष 1857 में आरम्भ हुआ परन्तु 1858 में इसका अंग्रेजों द्वारा दमन कर दिया गया।

क्रांति की असफलता के कारण-

भारतीय सैनिक

यद्यपि भारतीयों ने बड़ी वीरता से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ी थी परन्तु फिर भी उन्हें आशातीत सफलता नहीं मिली। इसके मुख्यतः निम्नलिखित कारण थे-

इस संग्राम की असफलता का मुख्य कारण भारतीयों में समन्वय का अभाव होना था। कुछ प्रांतों के शासकों ने तो अपने राज्यों की सुरक्षा के लिए अंग्रेजों का साथ दिया। प्रमुख रियासतों के राजाओं का सहयोग न मिलना भी असफलता का प्रमुख कारण था। यदि

इन्दौर, ग्वालियर और हैदराबाद के नरेश क्रान्तिकारियों का साथ देते तो शायद स्थिति कुछ और ही होती।

क्रांति में योग्य एवं कुशल नेतृत्व का अभाव था। बहादुरशाह विद्रोह के समय लगभग 80 वर्ष के थे। प्रत्येक क्रांतिकारी नेता ने अपने ढंग से क्रांति का संचालन किया।

अंग्रेजों ने सिख फौज की मदद से 1857 की क्रांति को दबाया।

भारतीयों की तुलना में अंग्रेज सैनिकों के पास अच्छे किस्म के हथियार थे। अंग्रेजी सेना ने नयी रायफल का प्रयोग बड़े अच्छे ढंग से किया जबकि भारतीय सैनिकों के पास गोला-बारूद की भी कमी थी।

क्रांति के परिणाम

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने एक युग का अन्त कर दिया और एक नवीन युग के बीज बोए। प्रादेशिक विस्तार के स्थान पर आर्थिक शोषण का युग प्रारम्भ हुआ।

सन् सत्तावन के विद्रोह का यद्यपि पूर्णतया दमन हो गया फिर भी इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को जड़ से हिला दिया था। दोबारा सन् सत्तावन जैसी घटना न हो तथा ब्रिटिश शासन को व्यवस्थित एवं सुदृढ़ करने के लिए महारानी विक्टोरिया ने 1858 के अपने घोषणापत्र में कुछ महत्वपूर्ण नीतियों का उल्लेख किया। इस घोषणा से दोहरा नियंत्रण समाप्त हो गया और ब्रिटिश सरकार ही सीधे भारतीय मामलों के लिए उत्तरदायी हो गई।

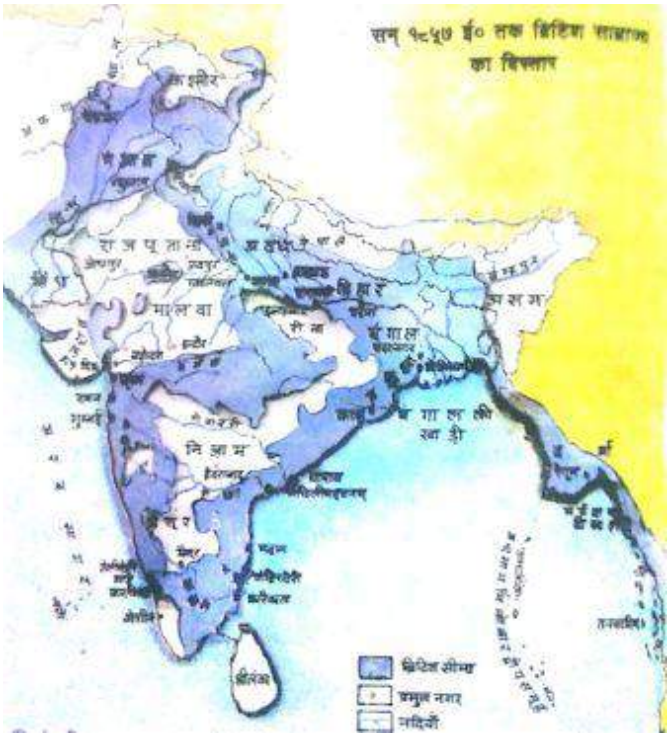

इस क्रान्ति ने भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का संचार किया और उन्हें अपनी मातृभूमि को विदेशी शासकों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रेरित किया।

और भी जानिए

1857 की क्रांति के बाद भारत राजनैतिक तथा आर्थिक रूप से प्रथम बार अपने लम्बे इतिहास में किसी विदेशी ताकत (ब्रिटिश साम्राज्य) पर निर्भर हो गया।

इलाहाबाद के मिन्टो पार्क में 1 नवम्बर 1858 को लार्ड केनिंग ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र जारी किया।

- शब्दावली -

दत्तक पुत्र- गोद लिया हुआ पुत्र

कच्चा माल - प्रकृति, खेतों या भूमि के अंदर से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ कच्चामाल कहलाती हैं। कारखाने में या यंत्र द्वारा जब उसका रूप परिवर्तित हो जाता है तो वह तैयार या निर्मित माल कहा जाता है।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) 1857 ई0 की क्रांति के लिए तिथि निश्चित की गई-

(क) 8 अप्रैल 1857 ई0 (ख) 31 मई 1857 ई0

(ग) 10 मई 1857 ई0 (घ) 1 जून 1857 ई0

(2) बहादुरशाह द्वितीय की मृत्यु हुई-

(क) रंगून में (ख) कानपुर में

(ग) झाँसी में (घ) लखनऊ में

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न-

(1) 1835 ई0 में कम्पनी के सिक्कों से किसका नाम हटा दिया गया ?

(2) सन् 1857 ई0 की क्रांति की शुरूआत कहाँ से हुई ?

(3) बंगाल छावनी के किस सिपाही ने कारतूस का प्रयोग करने से मना कर दिया था?

3. लघु उŸारीय प्रश्न-

(1) 1857 ई0 की क्रांति के चार कारण लिखिए।

(2) 1857 ई0 की क्रांति की असफलता के कारण लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(1) 1857 ई0 की क्रांति की प्रमुख घटनाओं के बारे में लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क अपने बड़ों से पता करके स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की एक सूची बनाइए।